MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue Feb. 2018

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

'आदिवासी साहित्य विमर्श'

डॉ.बापू जी.घोलप
संपादक

डॉ.भरत शेणकर
अतिथि संपादक

IMPACT 5.131 iijif FACTOR

51) हिन्दी कहानी में आदिवासी विमर्श, जनजातिय नारी जीवन के संघर्ष .....
डॉ मधुछन्दा चक्रवर्ती, बैंगलोर, || 169

52) हिंदी लोक साहित्य में चित्रित आदिवासी विमर्श ....
प्रकाश, हैदराबाद, तेलंगाना || 173

53) संजीव के 'धार' उपन्यास मे अभिव्यक्त आदिवासी चेतना
प्रा.वैशाली दगु दामले, ईगतपुरी || 175

54) अहमदनगर जिले की आदिवासी परंपरा एवं नृत्य
अमोल मच्छिंद दहातोंडे, सोनई || 178

55) आदिवासी कवियो की कविताओं में जीवन संघर्ष का चित्रण
प्रा. थोरात बबन किसन, जि. अहमदनगर || 180

56) हिंदी आदिवासी साहित्य : 'धार्मिकता' के विशेष संदर्भ में
गणेश ताराचंद खैरे, जि. पुणे || 182

57) हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श
प्रा. गोरख इदे, अकोले || 187

58) 'आदिवासी : मानवीय संवेदना'(उपन्यासकार वीरेंद्र जैन कृत 'पार' उपन्यास के ....
प्रा.मधुकर देशमुख, पुणे || 189

59) अनूदित हिन्दी उपन्यास 'जंगल के दावेदार' में चित्रित आदिवासी जीवन एवं संघर्ष
डॉ कोयल विश्वास, बैंगलूरु, कर्नाटक || 193

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
हर्षवर्धन पब्लिकेशन प्रा.लि.
मु.पो.लिंबागणेश, ता.जि.बीड पिन : ४३११२६ (महाराष्ट्र)
harshwardhanpubli@gamil.com, vaidyawarta@gmail.com
सर्व प्रकारच्या शैक्षणिक व संदर्भ ग्रंथाचे प्रकाशक आणि वितरक

गुलाम है। उनके पास खुद के बारे के सोचने के लिए समय ही नहीं है। सभी को यहाँ की अर्थ और समाज व्यवस्था ने लूला–लंगड़ा और कमजोर बनाया है। अगर कोई सचेत होकर इस क्रूर व्यवस्था से संघर्ष करने की क्षमता और साहस रखता है, तो वह मैना ही है। हैदर मामा उसके बारे में कहता है, "ई लगड़ा–लूला बीमार इसानों के बीच एक तू ही तो सबुत है।"

मैना अपने समाज से अत्याधिक प्रेम करती है इसलिए वह अविनाश शर्मा के जनमोर्चा से मिलकर सबको रोजगार मिले ऐसी जनखदान का निर्माण करती है। उसके इस कार्य से उसके प्रगतिवादी चरित का परिचय मिलता है।

संजीव ने मैना के माध्यम से समाज की स्त्री वर्ग को प्रतिकूल व्यवस्था को परिवर्तित करने की प्रबल प्रेरणा देने का अमूल्य कार्य किया है। मैना एक साधारण अनपढ़ आदिवासी स्त्री है, जो अपनी सोच और विचारों से पुरुषवादी समाज व्यवस्था से संघर्ष कर असामान्य बन जाती है।

आदिवासी चिंतन की दृष्टि से संजीव का 'धार' उपन्यास का अध्ययन करने पर हमारे सामने केन्द्रीय रूप में आदिवासियों का पीड़ित व शोषित रूप अंकित होता है। वर्तमान समय में यदि देखा जाए तो आदिवासी समाज वह समाज है जो सबसे अधिक वंचित, उपेक्षित तथा अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। उसमें चेतना तो आयी है, वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष तथा विद्रोह भी कर रहा है, किन्तु उसमें अधिक सफल नहीं हो पाया है, क्योंकि समाज के अन्य लोगों ने उन्हें सिर्फ और सिर्फ शोषण का शिकार बना रखा है।

संदर्भ –

१. डॉ.लक्ष्मणप्रसाद सिन्हा–भारतीय आदिवासियों की सांस्कृतिक प्रकृति–पूजा और पर्व–त्यौहार
२. रमणिका गुप्ता– आदिवासी साहित्य यात्रा
३. संजीव– धार
४. डॉ बापुराव देसाई– आदिवासी साहित्य विधा शास्त्र और इतिहास

54

अहमदनगर जिले की आदिवासी परंपरा एवं नृत्य

शोधार्थी–अमोल मच्छिंद दहातोंडे

मु.पो. चांदा, ता. नेवासा, जि. अ.नगर

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई

****

आदिवासी समाज ही भारत के मूल निवासी माने जाते है। आर्य भारत में आने से पूर्व भी भारत के प्राचीन जंगलों में आदिवासी रहते थे। इनमें अधिकतर आदिवासी छोटा नागपूर का प्रदेश, गोंदिया, गडचिरोली, छत्तीसगढ़ आदि क्षेत्रों में रहते थें। जिनमें प्रमुख भिल्ल, गोंड, संथाला, महादेव कोली आदि कई जातीयाँ आती है। बिरसा जाति के कई लोग भंडारा, गोंदिया, गडचिरोली आदि कई प्रदेशा में आज भी रहते है। महाराष्ट्र में भी कोली समाज के भी दो प्रकार माने गए है। जिसमें सूर्यवंशी और मच्छली पकडनेवाले कोलियों में वर्गीकृत किया जाता है। आज भी यह समाजमुख्य प्रवाह में शामिल नही हुआ है। इनको समाज के प्रमुख धारा में लाने के लिए शासन और समाज इन दोनों को काफी मेहनत करनी होगी।

महाराष्ट्र में अधिकतर आदिवासी समाज, धुले, नंदुरबार, अकोले(तहसिल), गडचिरोली, गोंदिया, भंडारा, वर्धा आदि कई जगहों पर रहते है। अपनी सिमित आय और शिक्षा के अभाव के कारण आज इस समाज के अधिकतर नौजवान माओवादी बनने पर मजबूर है। एक तो सरकार उनके उत्थान के लिए कुछ अधिक प्रयास नहीं कर रही है उपर से उनको दि गई एकमात्र चिज है जंगल और पहाड उनपर भी साधन संपदा को देखकर उनपर सरकार कब्जा करना चाहती है इस कारण इनका असंतोश बढ़ता जा रहा है। अशिक्षा और गरिबी होने पर भी इन लोगो की सांस्कृतिक धरोहर बहुत ही समृध्दशाली है। ये लोग निसर्ग को ही अपना सबकुछ मानते है। इसकी पूजा

करते है। अधिकतर आदिवासीयों ने जंगल से मिलनेवाली वस्तुओं पर अपना गुजारा करना छोड दिया है। पर्वतीय क्षेत्रों, तेंदूपत्ता उद्योग और शराब के उद्योग को अपना प्रमुख व्यवसाय बनाया है। चावल, गेहूं, बाजरी, नाचणी आदि अनेक प्रकार के अनाज ये लोग उगाते है। ये लोग अपनी उपजिविका का प्रमुख स्रोत खेती को ही मानते है।

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में भी अनेक प्रकार के आदिवासी रहते है। जिनमें ठाकर, महादेव कोली, भील्ल आदि जनजातियाँ है। जिन्होंने अपनी लोकसंस्कृति एवं लोकपरंपराओं को संजोकर रखा है। अपने पारंपारिक लोक गितों पर सामूहिक लोकनृत्य किया जाता है। जिसमें भोंडवा, मोडा, कामडीनृत्य, वेहडा, ठाकर गित आदि प्रमुख है।

१) भोंडवा – यह नृत्य प्रकार नवरात्र उत्सव के समय पर खेला जाता है। जिसमें महिलाएँ और लडकियाँ ज्यादातर सहभाग लेती है। जिसमें समूह बनाकर गाँव के प्रत्येक घर के सामने जाकर गाणा गाते हुए नृत्य करती है। नृत्य में एक कलश में हर प्रकार का धान (धान्य) होता है। आम के पत्तों में उसे ढककर रखा जाता है। नृत्य करनेवाली लडकियों के हाथों में मटकियाँ होती है। घर के सामने आनेपर घर का मालिक उस धान में कोई न कोई वस्तु छिपा देता है। नाचती हुई लडकियाँ यदि उस वस्तु का नाम अपने गित के द्वारा यदि पहचान लेती है तो उस घर का मालिक कुछ वस्तु, धान या बक्षिस उन्हें दे देता है। और नृत्य का काफिला दूसरे घर की तरफ बढ़ जाता है। आदिवासी जीवन में इस गीत का अलग ही महत्व होता है।

'' भोंडाईचा खान बया काय मी घातीला।
घडयाळ घातीला बया म्या नाय पाहिला।''

२) मोडा नृत्य : अकोला तहसील के आदिवासी लोग अधिकतर इस प्रकार का नृत्य करते है। 'मोडा' का अर्थ 'छुट्टी का दिन है। क्यों कि चावल की खेती करने में अधिक कष्ट उठाना पड़ता है। इस कारण एक दिन आराम मिलने के लिए कामोडा रखा जाता है। जिसमें मनोरंजन के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी बढ़ाना होता है। जिसमें अधिकतर पुरूष गोल बनाकर पारंपरिक वादयों पर नृत्य करते है। पूरी रात यह नृत्य करता है। और उसके दूसरे दिन छुट्टी ले ली जाती है।

३)वेहडा नृत्य – महाराष्ट्र के महादेव कोली आदिवासियों में लोगों का लोकप्रिय उत्सव वेहडा है। इस उत्सव में साज–श्रृंगार करके लोग नाटक खेलते है। नृत्य भी करते है। यह आदिवासियों का एक नाट्य प्रकार है। गाँव के लोग अलग–अलग मुखौटे (मुँह पर अलग–अलग प्राणियों के मुख की प्रतिकृती) लगाकर गाँव में जुलूस निकलता है। शेर, बाघ, आदि प्राणियों की चमडी को अपने शरिरपर ओढ़कर नृत्य करते है। गाँव के ग्रामदेवता को नमन किया जाता है। वेहडा नृत्य में भारतीय संस्कृति में घटित सारे प्रसंग और उनके देवी–देवताओं को अपने नृत्य में दर्शाया जाता है। राम, सिता, हनुमान, विष्णु, नारद आदि पात्रों को राम–रावण युध्द, वाली सुग्रीव युध्द आदि पात्रों के मुखौटे पहनकर गाँव के कलाकार नृत्य करते है। यह परंपरा करीब २०० वर्ष पुरानी है। एक सप्ताह तक चलनेवाले इस उत्सव में १०० से अधिक मुखौटों को दिखाया जाता है।

४)कामादि नृत्य: यह परंपरा कामडी नाम के लोगों ने शुरू की थी। इस कारण इस कोमडी नृत्य भी कहा जाता है। खेतों के काम शुरू करने से पहले यह नृत्य किया जाता है। साथ मुर्गे या बकरे के बली भी दि जाती है। ताकि खेती पर आनेवाले संकटों का निवारण हो सके। यह एक समूहनृत्य है। अलग–अलग समूह बनाकर रात का पारंपारिक गित गा–गाकर पूरी रात को नाचगान किया जाता है। यह नृत्यगित इस प्रकार है–

'' पडू रे पाया पडू धनतरि मातेच्या
पडू रे पाया पडू सभेच्या पाया पडू''

इस गित में 'धनतरि' का अर्थ है 'धरतीमाता' और 'पाया' का अर्थ है 'पाँव छूना' और 'सभेच्या' इस शब्द का अर्थ है 'प्रेक्षक या दर्शक'।

संक्षेप में हम कह सकते है कि आदिवासी लोक जीवन, अपनी पारंपारिक संस्कृति एवं परंपरा को अपने दैनंदिन जीवन का अभिन्न अंग मानते है। खेती का व्यवसाय होनेपर भी उस से राहत एवं मनोरंजन के अनेक प्रकार का निर्माण उन्होंने किया है जो की उनकी सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाने में मदत करता है।